वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 34
ISBN 978-93-80353-92-0

श्री गुणनंदि मुनीन्द्र विरचित

ऋषिमण्डल पूजा विधान

–हिन्दी भाषानुवाद–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य राष्ट्रगौरव, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 60वें त्यागदिवस एवं 78वें जन्मदिवस–शरदपूर्णिमा महोत्सव-2011 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404 ,फ़ोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, E-mail : rk195057@yahoo.com

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

बारहवाँ संस्करण	वीर नि. सं. 2537	मूल्य
2200 प्रतियाँ	आश्विन शुक्ला 15, शरदपूर्णिमा	20/-रु.
	11 अक्टूबर 2011	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-1981 (1100 प्रतियाँ), द्वितीय संस्करण-1982 (3300), तृतीय संस्करण-1991 (1100), चतुर्थ संस्करण-1994 (1100), पंचम संस्करण-1996 (2200), षष्ठम संस्करण-1998(1100), सप्तम संस्करण-2000 (2200 प्रतियाँ), अष्टम संस्करण-2004 (2200 प्रतियाँ), नवम संस्करप-2006 (1100 प्रतियाँ), दशम संस्करण-2006 (2200 प्रतियाँ), ग्यारहवाँ संस्करण-2009 (2200 प्रतियाँ)

कम्पोजिंग–ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सम्यक्त्व प्राप्त कर संसार भवावली से छूटना ही मनुष्य जीवन का सार है। आजकल प्रायः सभी प्राणी स्त्री–पुरुष धन–दौलत की चाह एवं अशांति आदि को दूर करने के लिए मिथ्या देवी–देवताओं की आराधना व्रत आदि करने लगते हैं जबकि जैनधर्म की देशना को प्राप्त कर हर प्राणी यह जानता है कि सम्यक्त्व के समान कोई दूसरा मित्र नहीं है और मिथ्यात्व के समान कोई दूसरा शत्रु नहीं है। इसलिए मिथ्यात्व का सेवन कदापि उपादेय नहीं है।

इस स्तोत्र के एक श्लोक में लिखा हुआ है कि यह स्तोत्र मिथ्यादृष्टि को नहीं देना चाहिए अर्थात् जो सम्यग्दृष्टि हैं वे ही इसकी आराधना करें अन्यथा देने वाले पर विपरीत असर पड़ता है।

भगवान् जिनेन्द्रदेव की भक्ति ही सम्यक्त्व है और वह भक्ति निमित्त नैमित्तिक पूजा, जाप्य आदि अनुष्ठानों से की जाती है। यह ऋषिमण्डल स्तोत्र एवं पूजन संस्कृत भाषा में सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है। इसके ऊपर लाखों प्राणियों की अपार श्रद्धा है और प्रति वर्ष भक्तिभाव पूर्वक इस पाठ को करते भी हैं।

श्री गुणनन्दि मुनीन्द्रकृत संस्कृत ऋषिमंडल विधान सोलापुर से प्रकाशित हुआ था। कई धर्म–प्रेमी बंधुओं के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने उसी के आधार से इस ऋषिमंडल विधान को सरल एवं सरस भाषा में पद्यमय बनाकर जो महान उपकार किया है उसके लिए भक्तगण सदैव चिरऋणी रहेंगे।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भक्तिमार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यस्वरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान बन सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पापपुंजों को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साथ गृहस्थ के षट्कर्म का पालन करना उसके लिए आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमण्डल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं, इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिकादि पर्वों में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

पिछले अनेक वर्षों से इन्द्रध्वज मण्डल विधान देश के कोने–कोने में अपनी सुरभि को फैला रहा है। इसका श्रेय परम पूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की साहित्यिक लेखनी को है। जो भी व्यक्ति जिस आशा को लेकर इस महामण्डल विधान को करते हैं निश्चित ही उस मनोवांछित कार्य की सिद्ध करते हैं। आज भौतिक चकाचौंध में फंसा हुआ प्राणी इसके लिए इच्छुक रहता है कि कुछ क्षण आत्मशांति मिले और क्षणिक शांति की प्राप्ति के लिए वह मिथ्यात्व की शरण ले लेता है चूँकि सम्यग्ज्ञान से विहीन होता है। लेकिन जब सद्गुरुओं का समागम प्राप्त होता है, तब वही प्राणी आत्मशांति के लिए इन्द्रध्वज आदि महाविधानों को करके अपूर्व शांति का अनुभव करता है और साथ ही इच्छित कार्य की सिद्धि भी होती है। आगमोक्त विधि से किया गया छोटा सा विधान भी विशेष चमत्कारिक फल को प्रदान करने वाला होता है।

इन्द्रध्वज विधान जैसी सरल पुस्तक देखकर व सुनकर भावविभोर हुए कितने ही गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्य माताजी के सामने ऋषिमण्डल आदि विधान बनाने का आग्रह किया, तब भक्तगणों के आग्रह को स्वीकार करके पूज्य माताजी ने तीस–चौबीसी विधान, शांतिमण्डल विधान, पंचपरमेष्ठी विधान, जिनगुणसम्पत्ति विधान आदि अनेक विधानों की भी रचना करके प्रदान किया है।

इस ऋषिमण्डल विधान को हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार एक दिन में कर सकता है। इस लालित्य एवं सौष्ठव से परिपूर्ण 'ऋषिमण्डल विधान' को करने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व शांति प्राप्त करेंगे, ऐसा विश्वास है।

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ परतीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा—गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
१. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री ऋषभदेव भगवान
	—श्री अजितनाथ भगवान
	—श्री अभिनंदननाथ भगवान
	—श्री सुमतिनाथ भगवान
	—श्री अनंतनाथ भगवान
२. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	—श्री संभवनाथ भगवान
३. कौशाम्बी (उ.प्र.)	—श्री पद्मप्रभु भगवान
४. वाराणसी (उ.प्र.)	—श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	—श्री पार्श्वनाथ भगवान
५. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	—श्री चन्द्रप्रभु भगवान
६. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	—श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
७. भद्रिकापुरी, इटखोरी (चतरा-झारखंड)	—श्री शीतलनाथ भगवान
८. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	—श्री श्रेयांसनाथ भगवान
९. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	—श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
१०. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	—श्री विमलनाथ भगवान
११. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री धर्मनाथ भगवान
१२. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	—श्री शांतिनाथ भगवान
	—श्री कुन्थुनाथ भगवान
	—श्री अरनाथ भगवान

१३. मिथिलापुरी — श्री मल्लिनाथ भगवान
— श्री नमिनाथ भगवान

१४. राजगृही (नालंदा-बिहार) — श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

१५. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.) — श्री नेमिनाथ भगवान

१६. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) — श्री महावीर भगवान

विशेष — ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

निवेदक —**अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी**

अध्यक्ष —**कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप**

प्रधान कार्यालय — **जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**
फोन नं.-०१२३३-२८०१८४, २८०२३६

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	नवदेवता पूजन	१
२.	मंगलाचरण	५
३.	ऋषिमण्डल स्तोत्र (संस्कृत)	९
४.	ऋषिमण्डल पूजा विधान	१६
५.	अथ अष्टबीजाक्षर पूजा	२५
६.	अथ अर्हन्त आदि पूजा	२८
७.	अथ भावनेन्द्रादि पूजा	३१
८.	अथ श्री आदि देवता पूजा	३६
९.	इष्ट प्रार्थना	४२
१०.	संघादि पूजा	४७
११.	भाषाकर्त्री की प्रशस्ति	४८
१२.	अथ ऋषिमण्डल स्तोत्र (हिन्दी)	४९
१३.	गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन	५७
१४.	आरती चौबीस भगवान की	६२
१५.	आरती श्री शांतिनाथ भगवान की	६३
१६.	मण्डल का नक्शा	६४

नवदेवता पूजन

रचयित्री—**गणिनी आर्यिका ज्ञानमती**

—गीता छन्द—

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मीजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मीजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य —*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा — **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जोभजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।७।।

दोहा — **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मीजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।९।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री गुणनन्दि मुनीन्द्र विरचित

ऋषिमंडल यंत्र पूजा

—हिन्दी भाषानुवाद—

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

मंगलाचरण

दोहा

श्री जिनेश को नमन कर, जो नव लब्धीयुक्त।
श्री ऋषिमण्डल यंत्र की, कहूँ यजनविधि अल्प।।१।।

यजमान का लक्षण

प्रसन्न विनयी बुद्धिमन्, न्यायोपार्जित वित्त।
शीलादीगुण युक्त सो, पूजक मान्य प्रशस्त।।२।।

विधानाचार्य का लक्षण

देश काल भावादि के, ज्ञानी निर्मम शुद्ध।
सद् वचनादिक गुणसहित, याजक वही प्रबुद्ध।।३।।

आचार्य देव का लक्षण

दर्शन ज्ञान चरित्रयुत, ममतहीन धीमान्।
क्षमाशील प्रश्नादि में, धीर सूरि गुरु जान।।४।।

मंडप का लक्षण

जो विस्तृत तोरण तथा, घण्टाकिंकिणि युक्त।
पुष्पमाल आदिक सहित, चार कुम्भ से युक्त।।५।।
भेरी ताल मृदंग बहु, वाद्यों की ध्वनि युक्त।
नारी के गीतादि युत, सुन्दर मण्डप शुद्ध।।६।।

सामग्री का लक्षण

सर्वोत्तम सब वस्तुएं, शाली चावल आदि।
दृग मन को आनन्दप्रद, सामग्री विविधादि।।७।।

यंत्रोद्धार विधि[१]

नरेन्द्र छंद

सोने चांदी या कांसे का, सुन्दर पात्र मंगाओ।
उसमें बीचों बीच 'ह्रीं', बीजाक्षर शुद्ध बनाओ।।
इसमें स्व स्व स्थानों में, चौबिस जिन को लिखिये।
उन उनके वर्णों व नाम को, वहीं वहीं पर रखिये।।८।।

[२]अर्द्धचन्द्र समकला श्वेत में, चन्द्रप्रभू सुविधि को।
नील बिंदु में मुनिसुव्रत औ, नेमिनाथ इन दो को।।

---

१. अब यन्त्र बनाने की विधि कहते हैं–

यन्त्र सोना, चाँदी अथवा कांसे की गोल थाली के आकार में बनवाना चाहिए। उनके बीचों–बीच के वलय में सकार के अन्त का हकार लिखें वह हकार यकार के अन्त अक्षर अर्थात् रकार से युक्त हो और उसमें चौथा स्वर ईकार को मिलावे और उसके मस्तक पर अर्ध चन्द्र के आकार में बिन्दु अर्थात् अनुस्वार रख देवें, ऐसा करने पर 'ह्रीं' यह बीजाक्षर बनेगा। उस ह्रीं वर्ण के बीच में यथास्थान चौबीस तीर्थंकरों के नाम लिखने चाहिए।

२. ह्रींकार की अर्धचन्द्रमा की कला में 'चन्द्रप्रभपुष्पदन्ताभ्यां नमः' यह लिखें। उस कला के ऊपर बिंदुस्थान में 'मुनिसुव्रतनेमिभ्यां नमः' लिखें। उपर्युक्त वर्ण के ईकार में "सुपार्श्व–पार्श्वाभ्यां नमः" यह लिखें। उपर्युक्त ह्रीं के मस्तक में 'पद्मप्रभवासुपूज्याभ्यां नमः' ऐसा लिखें। बीच के भाग में बचे हुए तीर्थंकर अर्थात् ऋषभाजितसंभवाभिनन्दनसुमतिशीतल–श्रेयोविमलानन्तधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिनमिवर्धमानेभ्यो नमः' यह लिखें। बीच का वलय पीतवर्ण का बनाना चाहिए।

'ई' मात्रा में श्री सुपार्श्व औ, पार्श्व जिनेश्वर लिखिये।
मस्तक में श्री पद्मप्रभू औ, वासुपूज्य को रखिये।।९।।
पुनः हकार रकार वर्ण जो, पीत स्वर्ण सम सुन्दर।
क्रम से सोलह शेष जिनेश्वर, उसमें लिखिये मनहर।।
पुनः वलयकार उसके बाहर, कोठे आठ सुलिखिये।
उनमें स्वर बीजाक्षर व्यंजन, बीजाक्षर को लिखिये।।१०।।

पुनः वलयकर आठ कोष्ठ में, पंचपरम गुरु उनको।
तीन रत्नत्रय को लिख करके, पुनः वलय इक कर दो।।
इसमें सोलह कोठे करके, भवनादिक चरसुरपति।
श्रुतावधी आदिक ऋद्धी युत, महामुनी बारह विध।।११।।

---

१. उस ह्रीं वर्ण के बाहर आठ कोठे वाले वलय का निर्माण करें जिसमें बुद्धिमान पुरुष क्रमशःलिखें।

(१) अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह् म्ल्व्र्यूं।। (२) क ख ग घ ङ भ्म्ल्व्र्यूं (३) च छ ज झ ञ म्म्ल्व्र्यूं (४) ट ठ ड ढ ण र्म्ल्व्र्यूं (५) त थ द ध न घ्म्ल्व्र्यूं (६) प फ ब भ म झ्म्ल्व्र्यूं (७) य र ल व स्म्ल्व्र्यूं (८) श ष स ह ख्म्ल्व्र्यूं इस प्रकार लिखें। उसके बाहर पुनः आठ कोठे वाले वलय को खीचें। उसमें बुद्धिमानों को क्रमशः निम्न प्रकार लिखना चाहिए।

(१) ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः (२) ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः (३) ॐ ह्रीं आचार्येभ्यो नमः (४) ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः (५) ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः (६) ॐ ह्रीं तत्त्वदृष्टिभ्यो नमः (७) ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः (८) ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

इस तरह लिखें।

(१) ॐ ह्रीं भावनेंद्राय (२) ॐ ह्रीं व्यंतरेंद्राय (३) ॐ ह्रीं ज्योतिष्केंद्राय (४) ॐ ह्रीं कल्पेंद्राय (५) ॐ ह्रीं श्रुतावधिभ्यो नमः (६) ॐ ह्रीं सर्वावधिभ्यो नमः (७) ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः (८) ॐ ह्रीं सर्वौषद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः (९) ॐ ह्रीं अनंतबलर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः (१०) ॐ ह्रीं तपःऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः (११) ॐ ह्रीं नमः (१२) ॐ ह्रीं रसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः (१३) ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः (१४) ॐ ह्रीं क्षेत्रर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः (१५) ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः यह लिखें।

उसके बाद चौबीस कोठे वाले वलय का निर्माण करें। उन २४ कोठों में क्रमशः चौबीस देवताओं के नाम लिखें।

[1]पुनः वलय कर चौबिस कोठे, में चौबिस देवी को।
तदनु यंत्र के चारों कोने, उनमें क्रम से लिक्खो।।
ॐक्ष्वीं क्षः ओं ह्रीं, विघ्नहर, इन बीजों को लिखिये।
इस विधि से यह यंत्र बनाकर, उसकी पूजा करिये।।१२।।

अथ यंत्रपूजा

सबसे पहले-ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

एसो पंचणमोयारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।

इस प्रकार प्रारम्भिक मंगल पाठ को पढ़कर आगे के ऋषिमंडल स्तोत्र का पाठ करें। अनन्तर 'ॐ ह्रीं ऋषिमंडल यंत्र पूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपामि' कहकर यंत्र के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

---

१. ॐ ह्रीं श्रिये २. ॐ ह्रीं ह्रिये ३. ॐ ह्रीं धृतये ४. ॐ ह्रीं लक्ष्मयै ५. ॐ ह्रीं गौर्ये ६. ॐ ह्रीं चंडिकायै ७. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै ८. ॐ ह्रीं जयायै ९. ॐ ह्रीं अंबिकायै १०. ॐ ह्रीं विजयायै ११. ॐ ह्रीं क्लिन्नायै १२. ॐ ह्रीं अजितायै १३. ॐ ह्रीं नित्यायै १४. ॐ ह्रीं मदद्रवायै १५. ॐ ह्रीं कामांगायै १६. ॐ ह्रीं कामबाणायै १७. ॐ ह्रीं सानंदायै १८. ॐ ह्रीं नंदिमालिन्यै १९. ॐ ह्रीं मायायै २०. ॐ ह्रीं मायाविन्यै २१. ॐ ह्रीं रौद्रायै २२. ॐ ह्रीं कलायै २३. ॐ ह्रीं काल्यै २४. ॐ ह्रीं कलिप्रियायै।

उसके बाद यंत्र के चारों कोनों में क्रमशः पत्र अर्थात् ॐ क्ष्वीं क्षः और चौथे में सर्व विघ्न को दूर करने वाले हींकार को लिखना चाहिए। अर्थात् ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्षः यह क्रमशः लिखें।

ऋषिमण्डल स्तोत्र (संस्कृत)

आद्यंताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत्स्थितम् ।
अग्निज्वालासमं नादं, बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।
अग्निज्वालासमाक्रान्तं, मनोमलविशोधनम् ।
देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं।।२।।
ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐसिद्धेभ्यो नमो नमः।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः।।३।।
ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः, तत्त्वदृष्टिभ्य ॐ नमः।
ॐ नमः शुद्धबोधेभ्य-श्चारित्रेभ्यो नमो नमः।।४।।युग्मं
श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत-दर्हदाद्यष्टकं शुभं।
स्थानेष्वष्टसु सन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितं।।५।।
आद्यं पदं शिरो रक्षेत्, परं रक्षतु मस्तकं।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ।।६।।
पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षतु कंठिकां[1]।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यन्तं, पादान्तं चाष्टमं पुनः।।७।।युग्मं
पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वित्रिपंचषान् ।
सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितो विंदुस्वरान् पृथक्।।८।।
पूज्यनामाक्षराद्यास्तु, पंचदर्शनबोधकं।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सांतसमलंकृतं।।९।।
[ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।
आराधक शुभ फल दो, नवबीजाक्षरयुतस्तुतः सिद्धः।
अष्टादशशुद्धाक्षर-मंत्रोयं जाप्य एव वरभक्त्या।।१०।।]
जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः।
अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ।।११।।

१. घंटिकां शब्द भी है।

तन्मध्ये संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारः, तारामण्डलमण्डितः।।१२।।
तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगं।
नमामि बिम्बमार्हत्यं, ललाटस्थं निरञ्जनं।।१३।।
अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं।
निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनम्।।१४।।
अनुश्रुतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसं मतं।
तामसं विरसं बुद्धं, तैजसं शर्वरी समं।।१५।।
साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं।
परापरं परातीतं, परं परपरापरं।।१६।।
सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितं।
निरञ्जनं निराकांक्षं, निर्लेपं वीतसंशयं।।१७।।
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं, शुद्धं सिद्धमभंगुरं।
ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं।।१८।।
अर्हदाख्यः सवर्णान्तः, सरेफो बिंदुमण्डितः।
तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुध्यानादिमालितः।।१९।।
एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं।
पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं।।२०।।
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तोत्र संगताः।।२१।।
नादश्चन्द्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः।
कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः।।२२।।
शिरः संलीन ईकारो, विनीला वर्णतः स्मृतः।
वर्णानुसारिसंलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं नमः।।२३।।
चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ।।२४।।

पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिश्रितौ।
शिरईस्थितिसंलीनौ, सुपार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ।।२५।।
शेषास्तीर्थंकराः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ता-श्चतुर्विंशतिरर्हतां।।२६।।
गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः।
सर्वदा सर्वलोकेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः।।२७।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु पन्नगाः।।२८।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु नागिनी।।२९।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु गोनसाः।।३०।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्यं चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु वृश्चिकाः।।३१।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु काकिनी।।३२।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु डाकिनी।।३३।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु साकिनी।।३४।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु राकिनी।।३५।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु लाकिनी।।३६।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु शाकिनी।।३७।।

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु हाकिनी।।३८।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु भैरवाः।।३९।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु राक्षसाः।।४०।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु व्यंतराः।।४१।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु भेकसाः।।४२।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु लीनसाः।।४३।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु ते ग्रहाः।।४४।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु तस्कराः।।४५।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु वह्नयः।।४६।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु श्रृंगिणः।।४७।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु दंष्ट्रिणः।।४८।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु रेलपाः।।४९।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु पक्षिणः।।५०।।

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु मुद्गलाः।।५१।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु जृम्भकाः।।५२।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु तोयदाः।।५३।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु सिंहकाः।।५४।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु शूकराः।।५५।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु चित्रकाः।।५६।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु हस्तिनः।।५७।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु भूमिपाः।।५८।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु शत्रवः।।५९।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु ग्रामिणः।।६०।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु दुर्जनाः।।६१।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु व्याधयः।।६२।।
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु सर्वतः।।६३।।

श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः।
ताभिरभ्यधिकं ज्योति-रर्हन् सर्वनिधीश्वरः।।६४।।
पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः।
स्वःस्वर्गवासिनो देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः।।६५।।
येऽवधिलब्ध्यो ये तु, परमावधिलब्धयः।
ते सर्वे मुनयो दिव्या, मां संरक्षन्तु सर्वतः।।६६।।
[[1]भवनव्यंतर ज्योतिष्कल्पेंद्रेभ्यो नमो नमः।
ये श्रुतावधयो देशा-वधयो योगिनायकाः।।६७।।
परमावधयस्सर्वा-वधयो ये दिगंबराः।
बुद्धि ऋद्धि युतास्सर्वौ-षधिऋद्धि श्रिताश्च ये।।६८।।
अनंतबलवृद्ध्याप्ता, ये तप्ततपसोन्नताः।
रसर्द्धि युंजो विक्रिय-र्द्धिभाजः क्षेत्रर्द्धिसंगताः।।६९।।
तपःसामर्थ्यसंप्राप्ता-क्षीणसद्यमहानसाः।
एतेभ्यो यतिनाथेभ्यो, नूतेभ्योऽपास्तवादिभिः।।७०।।
तीर्ण जन्मार्णवेभ्यस्सदृगृद्धिचारित्रभाग्भवैः।
भव्येशीभ्यो भदंतेभ्यो, नमोभीष्टपदाप्तये।।७१।।]
ॐ श्रीः ह्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चंडी सरस्वती।
जयाम्बा विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा।।७२।।
कामांगा कामबाणा च, सुनन्दा नन्दमालिनी।
माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया।।७३।।
एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये।
मम सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं मतिं।।७४।।
दुर्जनाः भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा।
ते सर्वे उपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः।।७५।।
दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, ऋषीणां मण्डलस्तवः।
भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतोऽनघः।।७६।।

१. ये पाँच श्लोक (६७, ६८, ६९, ७०, ७१) प्राचीन प्रतियों में उपलब्ध होते हैं। वर्तमान की प्रतियों में नहीं है।

रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतौ रक्षति मानवं।।७७।।
राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदं।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः।।७८।।
भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं।
धनार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः।।७९।।
स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्यैवेष्टमहासिद्धि-र्गृहे वसति शाश्वती।।८०।।
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारितः सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशनं।।८१।।
भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा।
वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः।।८२।।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ-वर्तिनः शाश्वता जिनाः।
तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः।।८३।।
एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्ववासिनो देये, बालहत्या पदे पदे।।८४।।
आचाम्लादितपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलिं।
अष्टसाहस्त्रिको जाप्यः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे।।८५।।
शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति च सम्पदा।।८६।।
अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत्।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्बिम्बं स पश्यति।।८७।।
दृष्टे सत्यार्हते बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवं।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं[१], परमानन्दसम्पदां।।८८।।
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं।
पठनात्स्मरणाज्जाप्यात्, सर्वदोषैर्विमुच्यते।।८९।।

।।इति स्तोत्रं।।

१. विश्वस्तं इति पाठः प्रतिभाति।

ऋषिमंडल पूजा विधान

चौबीस तीर्थंकर पूजा

शंभु छंद

जिन प्रभु ने निजकर्मारि जीत, कैवल्यसूर्य को प्रकट किया।
जग में भ्रमते सब जीवों को, दिव्य ध्वनि से संबोध दिया।।
फिर सादी हो भी अंतरहित, अक्षय निर्वाण धाम पाया।
उन ऋषभ आदि वीरांत जिनेश्वर, को मैं अब यजने आया।।१।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधापनम्।

अथ अष्टक-शंभु छंद

शशि सदृश विमल सन्मित्र सदृश, है मधुर और लघु मन भाया।
कर्पूर विमिश्रित कमलगंध, सुरभित शीतल जल भर लाया।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंत-शीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानंतधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्व-वर्धमानेभ्यः तीर्थंकरपरमदेवेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर सित चंदन, घनसार घिसा कर लाया हूँ।
बाहर अन्तर का ताप हरे, ऐसी इच्छा से आया हूँ।।

वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंत-शीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानंतधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्व-वर्धमानेभ्यः तीर्थंकरपरमदेवेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिसम सागर के फेन सदृश, औ कुंद पुष्प सम उज्ज्वल हैं।
माधुर्य गंधयुत सुभग पात्र में, रखे अखंडित तंदुल हैं।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं.....अक्षतं.....।

मंदार कुंद जाती कदंब, पंकज औ पारिजात लाया।
दशदिश में सुरभि करें ऐसे, बहु फूल चढ़ाकर सुख पाया।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं.....पुष्पं.....।

उत्तम-उत्तम नाना व्यंजन, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज क्षुधा व्याधि परिहरने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं.....नैवेद्यं.....।

निर्धूम शिखा है पीतकांति, जगमग-जगमग चहुँदिशी करे।
दीपक से आरति करते ही, निज अन्तर ज्ञान प्रकाश करे।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।६।।

ॐ ह्रीं.....दीपं.....।

कृष्णागरु आदि सुगन्धित बहु, द्रव्यों से धूप सुगंधित है।
जिन चरण निकट धूपायन में, खेते ही सुरभित दश दिक् हैं।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।७।।

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंत-शीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानंतधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्व-वर्धमानेभ्यः तीर्थंकरपरमदेवेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल नारंगी केलाफल, एला व विजौरा थाल भरे।
जिनराज निकट अर्पण करते, नवनिधियों से भंडार भरे।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।८।।

ॐ ह्रीं.....फलं.....।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, औ दीप धूप फल ले आया।
वसु अर्घ सजाकर जिनवर के, चरणों ढिग अर्पण को आया।।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गान करूँ।
उनके चरणों की पूजा कर, निज आत्म सुधारस पान करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं.....अर्घ्यं.....।

दोहा — **कंचन झारी में भरा, शीतल प्रासुक नीर।**
जिनपद में धारा करूँ, मिले भवाम्बुधि तीर।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

कमल बकुल बेला कुसुम, सुरभित सुन्दर लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक पूजा

शंभु छंद

जो परमानंद देह धारी, सुख ज्ञान अनंत पूर्ण धरते।
धर्मामृत की वर्षा करके, सब जीवों की पुष्टी करते।।
ऐसे श्रीनाभिराज नंदन, उनकी मैं पूजा करता हूँ।
संपूर्ण अमंगल दूर भगा, शुभ मंगल को विस्तरता हूँ।।१।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय चंदनं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय अक्षतं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय पुष्पं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय नैवेद्यं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय दीपं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय धूपं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय फलं.....।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री ऋषभतीर्थङ्कर परमदेवाय अर्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

भवसागर से तरने हेतू, बस एक सेतु सदृश जो हैं।
ध्यानाग्नि ताप से कामदेव को, भस्म किया भव विजयी हैं।।
निरवधिक सौख्य की प्राप्ति हेतु, निर्वाण धाम को प्राप्त किया।
रागारि जीतकर अजित हुए, उनको मैं पूजूँ शुद्ध हिया।।२।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री अजिततीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें)

जिन ध्यान अग्नि की ज्वाला से, निज कर्मवृक्ष को दग्ध किया।
भवरहित हुए श्रीसंभव जिन, अतिशय अमंद आनंद लिया।।
जिनके चरणाम्बुज में सुरपति, के मुकुट सदा झुकते रहते।
उन संभव जिन की पूजा कर, हम भी अनंत भव दुख दहते।।३।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री सम्भवतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें)

पीयूष सदृश पयसागर के, जल से जिनका अभिषेक हुआ।
व्यंजन लक्षण से शोभित तन, रवि से भी तेज विशेष हुआ।।
करुणामय जल से अखिल भव्य, जो तर्पित करते रहते हैं।
उन अभिनंदन जिनको पूजूँ, वे मन आनंदित करते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री अभिनन्दनतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें)

संपूर्ण कमल से अधिक सुरभि, ऐसा निर्मल शरीर प्रभु का।
सुर असुर असंख्यों चरणों में, नत रहते भक्ति अधीन मुदा।।
सब जन मन को हरने वाले, अन्वर्थनामधारी जिन हैं।
ऐसे श्री सुमतिनाथ प्रभु को, मैं पूजूँ वे सुमतिप्रद हैं।।५।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री सुमतितीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें)

गर्विष्ठ हुए वादी जन का, अभिमान नशे जिनके वच से।
अरविंद आदि उत्तम लक्षण, जिनके शरीर में अति विलसे।।
संपूर्ण तत्त्व के ज्ञाता हैं, मुनि मन को आह्लादित करते।
तन लाल कमल सम सुन्दर है, उनको मैं पूजूँ रुचि धरके।।६।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीपद्मप्रभतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें)

सब भव्य जनों को हितकारी, उपदेश सुना भव से तारें।
निःशेष कर्म को नष्ट किया, निर्दोष अखिल गुण को धारें।।
संपूर्ण चराचर विश्वतत्त्व, को जान लिया केवलज्ञानी।
ऐसे सुपार्श्व की पूजा कर, मैं करूँ सर्व दुख की हानी।।७।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री सुपार्श्वतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें।)

पूनों के चंद सदृश तन है, औ चंद्रचिन्ह से जग जाने।
करुणासागर सब पापरहित, शत इंद्र वंद्य जगगुरु माने।।

ऐसे ही चंद्रनाथ जिनकी, मैं नितप्रति अर्चा करता हूँ।
बस क्षायिक सम्यक् लब्धि हेतु, जिनगुण की चर्चा करता हूँ।।८।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री चन्द्रप्रभतीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें।)

जिनने अन्तर शत्रू जीते, औ कामदेव मद नष्ट किया।
परिग्रह विरहित हो करके भी, संपूर्ण गुणों का संघ किया।।
तीनों लोकों के भव्यजीव, जिनके पद कमलों में नमते।
उन पुष्पदंत की पूजाकर, हम मोहराज को भी हनते।।९।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री पुष्पदन्ततीर्थङ्कर परमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन से लेकर अर्घ्य तक चढ़ावें।)

कर्पूर श्वेत चंदन हिमकण, औ चंद्रकिरण से भी शीतल।
संसार दवानल शमन हेतु, जिनके वच मेघ सदृश शीतल।।
जो मुक्ति मार्ग दिखलाने में, भास्कर हैं फिर भी शीतल हैं।
ऐसे शीतल की पूजा से, होता भाक्तिक मन शीतल है।।१०।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री शीतलतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

भविजीवों को पुण्यानुबंध, भरपूर कराते पुण्यरूप।
सत्पुरुषों के स्वामी अनंत, गुणपुंज चिदानंदैकरूप।।
सब मोह, काम औ मृत्युराज, इन तीनों का संहार किये।
त्रिपुरारि हुए श्रेयांसनाथ, उनको मैं पूजूँ भक्ति लिये।।११।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री श्रेयांसतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

यतिपतियों के नायक माने, कल्याण संतती के वर्धक।
निज समवसरण के द्वादशगण, को दिव्य वचन से संवर्धक।।
सब वासवगण से पूजित हैं, श्रीवासुपूज्य जिन तीर्थेश्वर।
उनको मैं अर्चूं श्रद्धा से, वे होवें मुझको श्रेयस्कर।।१२।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री वासुपूज्यतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

जो भावकर्म औ द्रव्यकर्म, नोकर्म मलों से विरहित हैं।
इसलिए विमल अन्वर्थ नाम, धारण करते भवभयहृत हैं।।
भक्तों के कर्म कलंक रूप, सम्पूर्ण मलों को धोते हैं।
ऐसे श्री विमलनाथ की हम, पूजा करके मल धोते हैं।।१३।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री विमलतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

जिनने अन्तक का अन्त किया, औ अन्तातीत कहाये हैं।
दर्शन औ ज्ञान सौख्य वीरज, इनको अनन्त युत पाये हैं।।
सुरपति नरपति धरणीपति भी, जिनके पदपंकज को पूजें।
इन श्री अनन्त जिनकी पूजा, करके हम अन्तक को जीतें।।१४।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री अनंततीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

जिनने असंख्य भवि प्राणी को, धर्मोपदेश दे पुष्ट किया।
सद्धर्म चक्र का वर्तनकर, भारत को पूर्ण पवित्र किया।।
मुनिमन सरसिज निज वचकिरणों से, विकसित करने वाले हैं।
उन धर्मनाथ को मैं पूजूँ, वे भव दुख हरने वाले हैं।।१५।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री धर्मतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

निज को परिपूर्ण शांति देकर, पर को भी शांति प्रदान करें।
घाती कर्मों का कर विघात, पर को भी मार्ग विधान करें।।
तीर्थंकर चक्री कामदेव, तीनों पद को संप्राप्त किया।
उनकी पूजा भक्ती करके, मैंने सद्दर्शन लाभ लिया।।१६।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री शान्तिनाथतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

शशि रश्मीसम उज्ज्वल कीर्ती, जिनकी त्रिभुवन में फैल रही।
सूक्ष्म स्थूल सभी जंतू पर, करुणा करिये वचन यही।।

ऐसे श्री कुंथुनाथ जिनका, मैं नमन और अर्चन करता।
सब रोग शोक दुख संकट हर, सुख संपति और सिद्धि लभता।।१७।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री कुंथुतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

छहखंड जीतकर कीर्ति ध्वजा, फहराई भरत क्षेत्र भर में।
संसार भोग से राग छोड़, फिर धर्मचक्र धारा कर में।।
भविजन चातक के लिए मेघ, श्री अर जिनवर को मैं ध्याऊं।
उनकी पूजा भक्ति करके, सब पाप चक्र से बच जाऊं।।१८।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री अरनाथतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

जो मोहमल्ल औ काममल्ल, औ मृत्युमल्ल को जीत चुके।
निज विषयकषाय दूर करने, हेतू भविजन नित जिन्हें जजें।।
ऐसे श्री मल्लिनाथ जिनकी, मैं अष्ट विधार्चन करता हूँ।
निजसाम्य सुधारस पीने की, इच्छा से वंदन करता हूँ।।१९।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री मल्लितीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

जिनने शरीर से आत्मा को, निजध्यान शस्त्र से पृथक् किया।
अणुव्रत महाव्रत आदी देकर, पर का भी मार्ग प्रशस्त किया।।
उन मुनिसुव्रत तीर्थंकर की, जो श्रद्धा से पूजन करते।
वे भी उत्तम व्रत पा करके, उस बल संसार जलधि तिरते।।२०।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री मुनिसुव्रततीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

सब भवनवासि व्यंतरवासी, ज्योतिर्वासी वैमानिकसुर।
अपने परिवार देवियों सह, नित भक्ती करने में तत्पर।।

प्रभु के चरणों में स्वयं भाल, घिस घिस कर नमस्कार करते।
ऐसे नमि जिनवर के पद की, पूजनकर पाप तिमिर हरते।।२१।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री नमिनाथतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

बलभद्र और श्रीकृष्ण जिन्हों के, चरणों में नित नमते थे।
जो राजमती से हो विरक्त, मुक्ती की आशा करते थे।।
जिनका तनु नील वर्ण सुन्दर, लज्जित हो नीलकमल उससे।
चरणों में शंख चिन्ह स्थित, उन नेमी को पूजूँ रुचि से।।२२।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री नेमिनाथतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

क्रोधाग्नी से संतप्त कमठ, प्रभु तुम पर अति उपसर्ग किया।
फिर शांत रूप तुम रूप देख, तुम पद पंकज का भक्त हुआ।।
संकट को सहने में तुमही, अनुपम क्षमताधारी माने।
हे पार्श्वनाथ! तुम पूजन से, हम भी सब दुःख संकट हाने।।२३।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री पार्श्वनाथतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

सिद्धार्थ नृपति तुम सम सुत पा, निज जीवन धन्य बनाया था।
तुम जन्मोत्सव पर सुरपति ने, कुण्डलपुर तीर्थ बनाया था।।
श्री वर्धमान अतिवीर वीर, सन्मति औ महावीर स्वामी।
मैं पूजूँ अति श्रद्धारुचि से, प्रभु वाञ्छित देने में नामी।।२४।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्री वर्धमानतीर्थङ्करपरमदेवाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चन्दन आदि चढ़ावें।)

दोहा — **चौबीसों तीर्थेश को, पूरण अर्घ्य प्रदान।**
जिन भक्ती देती सकल, शांति श्री कल्याण।।२५।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थेभ्यः चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अथ अष्टबीजाक्षर पूजा

नरेन्द्र छंद

ह भ म र घ झ स ख बीजाक्षर ये, बीज सदृश फलदायी।
पिंड वर्ण आदी से संयुत, सब विध मंगलदायी।।
इनका आह्वानन स्थापन, सन्निधिकरण करूँ मैं।
सर्व अमंगल गृहबाधादिक, संकट दुःख हरूँ मैं।।१।।

ॐ ह्रीं पिंडवर्णादिसंयुताः ह भ म र घ झ स खाः बीजाक्षराः ! अत्र अवतरत अवतरत आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पिंडवर्णादिसंयुताः ह भ म र घ झ स खाः बीजाक्षराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पिंडवर्णादिसंयुताः ह भ म र घ झ स खाः बीजाक्षराः ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत सन्निधापनं।

अथ प्रत्येक पूजा

नरेन्द्र छंद

स्ववर्गयुत 'हं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल यह, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजाकर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।१।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः संयुताय ह्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

स्ववर्ग संयुत 'भं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।

श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।२।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय क ख ग घ ङ संयुताय भ्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें)

स्ववर्ग संयुत 'मं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।३।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय च छ ज झ ञ संयुताय म्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

स्ववर्ग संयुत 'रं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।४।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय ट ठ ड ढ ण संयुताय र्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें)

स्ववर्ग संयुत 'घं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय त थ द ध न संयुताय घ्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

स्ववर्ग संयुत 'झं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।

श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।६।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय प फ ब भ म संयुताय झ्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

स्ववर्ग संयुत 'सं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।७।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय य र ल व संयुताय स्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

स्ववर्ग संयुत 'खं' बीजाक्षर, पिंडाक्षर से युत है।
साग्नी और सबिंदु सकल है, छट्ठे स्वर से युत है।।
श्रद्धा से इसकी पूजा कर, सब दुःख कष्ट मिटाऊँ।
मल पच्चीस दोष से विरहित, सम्यग्दर्शन पाऊँ।।८।।

ॐ ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेतालपिशाचादिक-उच्चाटननाशनादिसमर्थाय श ष स ह संयुताय ख्म्ल्व्र्यूं इति बीजवर्णाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

'ह भ म र घ झ स ख' बीजाक्षर हैं, सब सुख शांति प्रदाता।
पिंडवर्ण आदी से संयुत, मेटें सर्व असाता।।
जल चन्दन अक्षत आदिक ले, पूरण अर्घ बनाऊँ।
आत्यंतिक सुख शांति प्राप्त कर, पूरण निजपद पाऊँ।।९।।

ॐ ह्रीं समस्तपिंडाक्षरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह भ म र घ झ स ख' बीजाक्षर हैं, पिंडवर्ण आदिक युत।
द्वादशांग के बीजरूप ये, सर्वशक्ति से अन्वित।।
जल आदिक से पूजन करते, सब सुख संपत्ति पाऊँ।
लक्ष्मी वृद्धि समृद्धी पाकर, निजगुण संपति पाऊँ।।

इति पुष्पांजलिः।

अथ अर्हन्त आदि पूजा

गीता छंद

अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, सर्व साधू पांच ये।
निजनिज गुणों से युत इन्हों को, भजूँ मन वच काय से।।
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, मुक्ति के कारण कहे।
व्यवहार निश्चय से द्विधा, इनको जजें शिवपथ लहें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राणि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राणि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राणि! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधापनं।

अथ पूजा

(चाल छंद-हे दीनबन्धु)

अर्हंत सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु को।
सम्यक्त्वदरश ज्ञान चरित मुक्ति मार्ग को।।
मैं अष्ट द्रव्य लेय भक्तिभाव से जजूँ।
उनके सुपद की प्राप्ति हेतु नित्य ही भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं मोक्षसुखोपलंभबीजभूतेभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-तत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

अथ प्रत्येक पूजा

शंभु छंद

माता के उर में आने से, छह महिने भी पहले से ही।
सुरपति आज्ञा से धनद यहाँ, रत्नों को वर्षावे नित ही।।

मेरु पर हो अभिषेक प्रभू, दीक्षा ले केवलज्ञान वरें।
सब कर्मजीत शिव लहें उन्हीं, अर्हंतों का हम यजन करें।।१।।
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थेभ्यः अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

नहिं रूप अतः जो निराकार, साकार निजात्म प्रदेशों से।
सब लोक-अलोक जगत् देखें, जाने निज ज्ञान दरश गुण से।।
उत्पादनाश औ ध्रौव्यसहित, फिर भी परिपूर्ण स्वस्थ सुन्दर।
त्रिभुवन से पूजित सिद्धों को, मैं पूजूँ भक्तिभाव मन धर।।२।।
ॐ ह्रीं निष्ठितपरिपूर्णभव्यार्थेभ्यः सिद्धेभ्यो जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

जो सब शास्त्रों के पारंगत, जिनकी वाणी सूक्तिमय है।
जो मिथ्यामत का वमन कराकर, धर्मौषधि पिलाते हैं।।
सम्पूर्ण गुणों के आकर हैं, शिष्यों का पालन करते हैं।
उन आचार्यों को नित पूजूँ, वे शिवपथ में ले धरते हैं।।३।।
ॐ ह्रीं भेदाभेदरत्नत्रयपालनसमर्थेभ्यः आचार्येभ्यो जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

सद्विद्या का अभ्यास करें, पर को अध्ययन कराते हैं।
इंद्रिय सुख आशा से विरहित, मुक्ती की आश कराते हैं।।
शास्त्रों का अर्थ प्रगट करके, शिष्यों को संतर्पित करते।
उन उपाध्याय को मैं पूजूँ, वे सम्यक् ज्योति प्रकट करते।।४।।
ॐ ह्रीं सद्विद्यानुष्ठानाभ्यासोद्यतेभ्यः पाठकेभ्यो जलं.....।

(इस मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

एकत्व भावना को भाते, निज आतम अनुभव करते हैं।
निश्चय-व्यवहार रत्नत्रय का, नितप्रति आराधन करते हैं।।
इंद्रिय औ मन को साधित कर, शुद्धोपयोग में रमते हैं।
उन साधू को हम नित पूजें, वे मुक्ती साधना करते हैं।।५।।
ॐ ह्रीं परमसुखप्राप्तिबद्धकक्षापरमोपेक्षानियतेभ्यः सर्वसाधुभ्यो जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

तत्त्वार्थों की श्रद्धा करना, यह सम्यग्दर्शन माना है।
चारित्रादि का मूल भूत, द्वयभेद रूप से माना है।।
भव का अत्यन्त विनाश करे, इसलिए इसे मैं यजता हूँ।
क्षायिक समकित लब्धी हेतू, नितप्रति मैं अर्चा करता हूँ।।६।।
ॐ ह्रीं संसारान्तकरणसमर्थायै तत्त्वदृष्टये जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

संशय आदिक से रहित ज्ञान, तत्त्वार्थ बोधकारी जो है।
चारित से मैत्री करवाता, बस सम्यग्ज्ञान नाम यह है।।
कैवल्य प्राप्ति में बीजभूत, मैं इसकी अर्चा करता हूँ।
निज शुद्धातम अनुभव हेतू, इसकी ही चर्चा करता हूँ।।७।।
ॐ ह्रीं सत्सुखप्राप्तिमूलभूताय सम्यग्ज्ञानाय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

सावद्य योग से जो विरहित, आरम्भ परिग्रह नहिं जिसमें।
संसार नाश का कारण है, वह है सम्यक्चारित सच में।।
मन वच तन से रुचि पूर्वक मैं, उसका अभिनंदन करता हूँ।
पंचम चारित की प्राप्ति हेतु, चारित का अर्चन करता हूँ।।८।।
ॐ ह्रीं स्वर्गादिसंपत्तिनिदानभूताय सम्यक्चारित्राय जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदनादि चढ़ावें।)

अर्हंत सिद्ध सूरी पाठक, साधू सम्यक्त्व ज्ञान चारित।
जो इन आठों को नित पूजें, वे तिर जाते हैं भव वारिध।।
निज रत्नत्रय की पूर्तिहेतु, मैं पूरण अर्घ चढ़ाता हूँ।
सब क्षेम और सुख शांति मिले, बस यही भावना भाता हूँ।।९।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अथ भावनेन्द्रादि पूजा

गीता छंद

भावन अधिप आदिक कहें, जो इन्द्रगण वे सब यहाँ।
आवें विराजें विघ्न नाशें, धर्मवत्सल से यहाँ।।
जो मुनि श्रुतावधि आदि ऋद्धि, से सहित उनको यहाँ।
मैं भक्ति से आह्वान कर, स्थापना भी कर रहा।।१।।

ॐ ह्रीं भावनेशादिश्रुतावध्यादियोगिनः अत्र अवतरत अवतरत, आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भावनेशादिश्रुतावध्यादियोगिनः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भावनेशादिश्रुतावध्यादियोगिनः अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधापनं।

अथ प्रत्येक पूजा

रोला छंद

निज वैभव परिवार, से शोभें भवनों में।
निज वाहन पर बैठ, आते जिन सदनों में।।
श्री जिनपति के भक्त, भवनवासि के पति जो।
इस विधान में आज, अर्घ समर्पित उनको।।१।।

ॐ ह्रीं भावनेंद्राय इदं अर्घं, पाद्यं जलं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

व्यंतरसुर समुदाय, से सेवित हैं नित जो।
तीर्थेश्वर को नित्य, शिरसा नमन करें जो।।
ऐसे व्यंतर इन्द्र, अर्घ समर्पित उनको।
जिन भक्तों के सर्व, विघ्नों की शान्ति हो।।२।।

ॐ ह्रीं व्यंतरेन्द्राय इदं अर्घं, पाद्यं जलं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की भक्ति, करने में तत्पर जो।
वाहन आदि विभूति, तथा कांति से युत जो।।
ज्योतिर्वासी इन्द्र, अर्घ समर्पण उनको।
यज्ञ विधी के सर्व, विघ्नसमूह नशे जो।।३।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्केन्द्राय इदं अर्घं.....।

कल्पवासिके इन्द्र, सभी सुरों से सेवित।
बहुत विभव से पूर्ण, अतिशय ऋद्धि समन्वित।।
जिन पूजन में भाग, लेने के अधिकारी।
उनको अर्घ समर्प्य, विधि हो पूर्ण हमारी।।४।।

ॐ ह्रीं कल्पेन्द्राय इदं अर्घं.....।

वसंततिलका छंद

व्यवहार निश्चय सुसंयम पालते जो।
वैसी विशुद्धि युत उत्तम ध्यान धारें।।
ऐसे श्रुतावधि मुनीश्वर को जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम पालते जो।
वैसी विशुद्धि युत संतत ध्यान प्रेमी।।
देशावधी मुनि समूह उन्हें जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं देशावधिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम पालते जो।
वैसी विशुद्धियुत ध्यान करें स्वयं का।।

परमावधी मुनि समूह उन्हें जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।७।।
ॐ ह्रीं परमावधिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम को धरें जो।
उत्तम विशुद्धि युत आतम ध्यान धरते।।
सर्वावधी मुनि समूह उन्हें भजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।८।।
ॐ ह्रीं सर्वावधिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम पालते जो।
वैसी विशुद्धियुत उत्तम ध्यान करते।।
वे बुद्धि ऋद्धिधर साधु उन्हें भजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।९।।
ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम के धनी जो।
उत्तम विशुद्धियुत ध्यान करें स्वयं का।।
सर्वौषधी धरें ऋद्धि, उन्हें भजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१०।।
ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय द्विसंयम को धरें जो।
उत्तम विशुद्धियुत ध्यान करें स्वयं का।।

धारें अनंतबल ऋद्धि उन्हें जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।११।।
ॐ ह्रीं अनंतबलऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय द्विसंयम पालते हैं।
उत्तम विशुद्धियुत धर्म व शुक्ल ध्यानी।।
जो तप्त ऋद्धिधर साधु उन्हें जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१२।।
ॐ ह्रीं तप्तऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय द्विसंयम पालते हैं।
उत्तम विशुद्धियुत स्वातम ध्यान धारें।।
रस ऋद्धि संयुत मुनी उनको जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१३।।
ॐ ह्रीं रसऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंमय धारते हैं।
उत्तम विशुद्धियुत आतमध्यानलीन।।
जो विक्रियर्द्धि धर साधु उन्हें नमूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१४।।
ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।
(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम पालते हैं।
उत्तम विशुद्धियुत ध्यान करें स्वयं का।।

जो क्षेत्रऋद्धि धर साधु उन्हें नमूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१५।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

व्यवहार निश्चय सुसंयम के धनी जो।
उत्तम विशुद्धि युत आतम तत्त्व ध्याते।।
अक्षीण ऋद्धि सुमहानस को जजूँ मैं।
स्वात्मैकजन्य समतारस को चखूँ मैं।।१६।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः जलं.....।

(इसी मंत्र से चंदन आदि चढ़ावें।)

पूर्णार्घ्य —नरेन्द्र छंद

चतुर्निकायदेव के जितने, इंद्रवृंद माने हैं।
श्रुत अवधी आदिक ऋद्धीयुत, मुनिगण दुख हाने हैं।।
उन सबको मैं इस विधान में, पूरण अर्घ्य चढ़ाऊँ।
निज भक्तों को शिवसुख देवें, ऐसी आश लगाऊँ।।१७।।

ॐ ह्रीं भावनेशादिश्रुतावध्यादिमुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष औ, वैमानिक के अधिपति।
श्रुतावधि देशावधि परमावधि सर्वावधि मुनिपति।।
बुद्धि ऋद्धि आदिक ऋद्धीधर, महामुनी हैं जितने।
मनुज लोक में शांति पुष्टि औ लक्ष्मी हमको देवें।।१८।।

इति इष्ट प्रार्थना।

अथ श्री आदि देवता पूजा

गीता छंद

श्री आदि देवी तुम सभी को, हम यहाँ आह्वानते।
परिवार वैभव से सहित, आवो यहाँ बैठो अबे।।
जिन धर्मवत्सल हम तुम्हारा, कर रहे आदर सतत।
प्रत्येक को हम अर्घ अर्पण, से करें संतुष्ट अब।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रमुखचतुर्विंशतिदेवताः अत्र आगच्छत आगच्छत, पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक पूजा

रोलाछंद

श्री जिनवर की भक्ति, करने में तत्पर हैं।
'श्री देवी' है नाम, बहुवैभव संयुत हैं।।
निज परिवार समेत, आवो यज्ञ विधी में।
जल गंधादिक लेय, अर्घ समर्प्य करूँ मैं।।१।।

ॐ ह्री श्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ! इदं अर्घं पाद्यं जलं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।

तीन भुवन के नाथ, भववारिधि से तारक।
घोर जिनेश्वरदेव, उनकी भक्ति करें नित।।
'ह्रीं देवी' जगख्यात, उनको यहाँ बुलाके।
अर्घ समर्पूं आज, जल गंधादि मिलाके।।२।।

ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घं.....।

सुख अनंत संपन्न, भव से रहित निरंजन।
तीर्थंकर पदपद्म, करें हृदय में धारण।।
ऐसी जो 'धृति देवि', उनको यहाँ बुलाऊँ।
जल गंधादिक अर्घ, अर्पण कर सुख पाऊँ।।३।।

ॐ ह्रीं धृतिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ इदं अर्घ्यं.....।

जो अनंतदृगज्ञान, सुख औ वीर्य गुणों के।
रत्नाकर हैं मान्य, वे जिनवर गुरु सबके।।
उनके चरण सरोज, की सेवा में रत जो।
'लक्ष्मीदेवी' नाम, अर्घ समर्पूं उसको।।४।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

सुरपति अहिपति और, नरपति से पूजित जो।
सम्यग्ज्ञान प्रदान, करते नित भविजन को।।
ऐसे जिन को नित्य, जो निज मन में धरती।
'गौरी देवी' सिद्ध, अर्घ देऊँ उसको भी।।५।

ॐ ह्रीं गौरीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

निज कांति से व्याप्त, अति सौंदर्य सहित हैं।
ऐसे श्री जिननाथ, उनको जो अर्चत हैं।।
देवि 'चंडिका' नाम, सम्यक्रत्न धरे जो।
अर्घ समर्पूं आज, पूजत विघ्न हरे वो।।६।।

ॐ ह्रीं चंडिकादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

कर्मशत्रु विध्वंस, करके जिनपद पायो।
अतिशय लक्षण युक्त, उनको नमत सदा जो।।
सरस्वती है नाम, उसको अर्घ समर्पूं।
पूजन में दे भाग, उसकी तुष्टी कर दूँ।।७।।

ॐ ह्रीं सरस्वतीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं....।

निर्विकार साकार, निराकार भी जो हैं।
कांक्षा आदि विहीन, तीर्थंकर जिन जो हैं।।
उनकी पूजन भक्ति, करने में तत्पर जो।
देवी 'जया' प्रसिद्ध, अर्घ समर्पूं उसको।।८।।

ॐ ह्रीं जयादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

दिव्यध्वनी के नाथ, सबको हित उपदेशें।
किया त्रिजग को व्याप्त, ज्ञानमयी किरणों से।।
ऐसे जिनकी नित्य, सेवाभक्ति करें जो।
देवि 'अंबिका' नाम, अर्घ समर्पूं उसको।।९।।

ॐ ह्रीं अंबिकादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

चार घातिया कर्म, नाश किया जिनवर हैं।
तत्त्वों का उपदेश, करते श्रेयस्कर हैं।।
'विजया' देवी नित्य, उनकी सेवा करती।
उसको अर्घ समर्प्य, हम बनते सम्यक्त्वी।।१०।।

ॐ ह्रीं विजयादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

श्री जिनधर्मपीयूष, पान करा भविजन को।
प्राप्त किया निर्वाण, धरे अनंत गुणों को।।
उनकी पूजा भक्ति, करे सदा हर्षित हो।
'क्लिन्ना' देवी नाम, अर्घ समर्पण उसको।।११।।

ॐ ह्रीं क्लिन्नादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

सुर असुरों से पूज्य, त्रिभुवन के गुरु माने।
उनका प्रणमन नित्य, करती श्रद्धा ठाने।।
'अजिता' देवी नाम, अर्घ समर्पण उसको।
जिन आगम परमाण, सम्यग्दर्शन शुचि हो।।१२।।

ॐ ह्रीं अजितादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

अमल विमल चिद्रूप, चिन्मय ज्ञानस्वरूपी।
निज में पावन रूप, गुण अनंत सुखरूपी।।
ऐसे जिनवर नाम, को जो चित में धारे।
'नित्या' देवी नाम, उसको अर्घ उतारे।।१३।।

ॐ ह्रीं नित्यादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

अंतक का कर अंत, अंतातीत हुए जो।
दर्शन ज्ञान अनंत, करके मोक्ष गये जो।।
उनका प्रमुदित चित्त, जो आराधन करती।
'मदद्रवा' है नाम, अर्घ समर्पूं मैं भी।।१४।।

ॐ ह्रीं मदद्रवादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

आशापाश विदूर, आशावसन[१] धरा जो।
कामदेव मद चूर, कामिनी मुक्ति वरा जो।।
ऐसे जिनकी नित्य, पूजा भक्ति करे जो।
'कामांगा' है नाम, अर्घ समर्पण उसको।।१५।।

ॐ ह्रीं कामांगादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

ध्यानचक्र को लेय, कर्मचक्र क्षय कीना।
धर्मचक्र को धार, भविजन का हित कीना।।
ऐसे ही जिनदेव, जो उनको नित ध्याती।
अर्घ चढ़ाऊँ आज, 'कामवाणा' वह देवी।।१६।।

ॐ ह्रीं कामवाणादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

नित्यानंद स्वरूप, चिदानंद चिद्रूपी।
निखिलदेव से पूज्य, परमानंद स्वरूपी।।
तीर्थंकर जिननाथ, उनको मुदसे पूजे।
'सानंदा' वह देवि, उसको अर्घ समर्पे।।१७।।

ॐ ह्रीं सानंदादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

धर्म कल्पतरु आप, मनवाञ्छित फल देते।
चिंतामणि रत्नाभ, चिंतित फल सब लेते।।
'नंदमालिनी' देवि, जजती भक्ति समेता।
अर्घ समर्पण आज, उस देवी को करता।।१८।।

ॐ ह्रीं नंदमालिनीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

१. दिशारूपी वस्त्र।

मायादिक बहुदोष, जिनने दूर भगाये।
गुण अनंत का कोष, पूर्ण किये सुख पाये।।
ऐसे श्री जिननाथ, उनको जजें सदा जो।
'माया' देवी नाम, अर्घ चढ़ाऊँ उसको।।१९।।

ॐ ह्रीं मायादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

नानाविध जगसौख्य, मायाजाल सदृश है।
शाश्वत नहीं विनष्ट, क्षण में हो नश्वर है।।
उनसे रहित जिनेन्द्र, उनकी भक्ति करे जो।
'मायाविनि' वे देवि, अर्घ समर्पूं उसको।।२०।।

ॐ ह्रीं मायाविनीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

आर्तरौद्र से दूर, धर्म शुक्ल को धरके।
किया मोह मद चूर, मुक्ति लिया निजबल से।।
ऐसे जिनको नित्य, श्रद्धा से भजती जो।
'रौद्री' देवी नाम, अर्घदान दूँ उसको।।२१।।

ॐ ह्रीं रौद्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

तीनलोक तिहुँकाल, एक समय में जाने।
सकल निकल परमात्म, पद पाया कलिं हाने।।
उनको चित्त में धार, 'कला' देवि गुण गावे।
उसको अर्घ चढ़ाय, कला गुणों को पावें।।२२।।

ॐ ह्रीं कलादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

जन्म जरा औ मृत्यु, तीनों व्याधि नशाके।
पूर्णतया जो स्वस्थ, हुए ज्ञानतनु पाके।।
उन जिनपति की भक्त, सम्यग्दर्शन युत जो।
'काली' देवी नाम, अर्घ समर्पूं उसको।।२३।।

ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

१. पापकर्म का नाश कर देने पर।

अक्षय अव्याबाध, ज्ञान सौख्य से पूरे।
ऐसे श्रीजिननाथ, सुख देते भरपूरे।।
उनको भक्ति समेत, 'कलिप्रिया' जजती है।
उनको अर्घ चढ़ाय, जजूँ विघ्न हरती वे।।२४।।

ॐ ह्रीं कलिप्रियादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य —कुसुमलताछंद

जिनवर चरण की भक्ति में, तत्पर प्रभू गुण गावती।
सम्यक्त्व से संयुक्त हैं, जिनभक्त को बहु मानती।।
श्री ह्री प्रमुख चौबीस हैं, ये देवियाँ जिनधर्म में।
अनुग्रह करें जिनभक्त पर, पूर्णार्घ मैं अर्पूं उन्हें।।२५।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रमुखचतुर्विंशतिदेवीभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि इति स्वाहा।

इष्ट प्रार्थना

शंभु छंद

जलगंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलादि से।
श्री आदि ये सब देवियाँ, विधिवत् किया अर्चित उन्हें।।
ये भक्तवत्सलता भरीं, हम भक्त की रक्षा करें।
सब विघ्न संकट चूरकर, सुख शांति दे संपति भरें।।

इत्याशीर्वादः

(इसके बाद ऋषिमंडल यंत्र के ऊपर शुद्ध लवंगों को या चमेली, जुही आदि फूलों को चढ़ाते हुए ऋषिमंडल मंत्र का १०८ बार जाप्य स्थिर आसन से एकाग्रतापूर्वक करें।)

ऋषिमंडल का मंत्र

ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

जयमाला-त्रिभंगी छंद

श्री जिनवरचरणा, सुरगणशरणा, भवभय हरणा नित प्रणमूँ।
निज जन्मजरामृति, स्वयं किया हति, मुक्तिरमापति नित्य नमूँ।।
शिव सुख के दाता, भवदुख त्राता, भाग्य विधाता गुण गाऊँ।
निज भक्ति बढ़ाकर, स्तुतिरचनाकर, सब संकट हर सुख पाऊँ।।१।।

शंभु छंद

जय जय श्री ऋषभदेव जिनवर, कर्मारिचक्र का घात किया।
जय जय श्री अजितनाथ जिनवर, निजमोह शत्रु का नाश किया।।
जय जय श्री संभव जिन तुमने, भववारिधि को स्वयमेव तिरा।
जय जय श्री अभिनंदन जिनवर, परमानंदामृत पान करा।।२।।

जय जय श्री सुमतिनाथ तुमने, सब कुमति नाथ शिवतिय पाई।
जय जय श्री पद्मप्रभू तुमने, मुनिवृंदों से पूजा पाई।।

जय जय सुपार्श्वजिन निजकांती से, भासित होते त्रिभुवन में।
जय जय श्री चंद्रनाथ तुमको, शत इंद्र वृंद भी नित प्रणमें।।३।।
जय जय श्री पुष्पदंत स्वामी, तुम कामदेव मद ध्वंस किया।
जय जय श्री शीतल जिननामी, निजवच से जग को बोध दिया।।
जय जय श्रेयांस जिनेश्वर तुम, पद का वंदन श्रेयस्कर है।
जय जय श्री वासुपूज्य जिनवर, जी बारहवें तीर्थंकर हैं।।४।।
जय जय मद मोह राग आदिक, को नाश निजातम प्रकटाया।
जय जय भगवान स्वयं बनकर, मुक्ती का मारग दिखलाया।।
जय जय श्री विमल जिनेश्वर तुम, निजज्ञान विमलकर सुख पाया।
जय जय अनंत जिनदेव आप, निजपद अनंत कर शिव पाया।।५।।
जय जय श्रीधर्म जिनेन्द्र आप, धर्मोपदेश के अधिकारी।
जय जय श्री शांतिनाथ भगवन्, परिपूर्ण शांतिमय अविकारी।।
जय जय श्री कुंथुनाथ तुमने, सब कर्म पंक को दूर किया।
जय जय श्री अरतीर्थेश आप, मृत्यूअरि को चकचूर किया।।६।।
जय जय श्री मल्लिनाथ भगवन्, बस स्याद्वाद के नायक हो।
जय जय मुनिसुव्रत देव आप, सब विश्व तत्त्व के ज्ञायक हो।।
जय जय श्री नमि जिनराज स्वयं, संपूर्ण परिग्रह रहित हुए।
जय जय श्री नेमिनाथ भगवन् , तुम मुक्ति वल्लभाकंत हुए।।७।।
जय जय श्री पार्श्वनाथ तुमको, धरणीपति पद्मावति पूजें।
जय जय श्री वर्धमान भगवन्, तुम गुणगणपति को जग पूजें।।
इसविध जग ईश्वर तीर्थेश्वर, वंदनकर कर्मकलंक हरें।
सुरपति वंदित जिनवर गुण की, जयमाला पढ़कर अर्घ्य करें।।८।।

दोहा

ऋषिमंडल वर यंत्र की, पूजा करूँ महान।
केवल 'ज्ञानमती' सहित, पाऊँ पद निर्वाण।।९।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

(इस जयमाला को अति आदर से अति उत्कंठा से पढ़कर तीन प्रदक्षिणा देते हुए जल आदि आठ द्रव्यों से बने हुए सुवर्ण आदि के पात्र में रखे हुए पूर्ण अर्घ्य को चढ़ाकर इंद्र आदि सब लोग मिलकर नमस्कार करें। यदि पूजा पूर्ण हो जाये और कुछ रात रहे उस समय तीर्थंकरों का पुराण आदि बाँचकर रात्रि को बिताकर प्रातः अभिषेक विधि करें। उसके बाद "शांतिजिनं" इत्यादि शांतिपाठ पढ़कर शांतिविधान करें। उसके पश्चात् निम्नलिखित आशीर्वाद श्लोकों को पढ़ें।)

आशीर्वाद

गीता छंद

सम्पूर्ण सुरपति जिनपदाम्बुज, में मुकुट नित नत करें।
सुरवृक्ष के सुरभित सुमन ला, जिन चरण अर्पण करें।।
अति भक्तिवश वंदन करें, पूजन करें संस्तव करें।
वे श्री जिनेश्वर देव तुमको, ऋद्धि वृद्धी नित करें।।१।।
संपूर्ण घात अघाति हर के, ज्ञान दर्शनमय हुए।
सुख वीर्य अव्याबाध कर, चैतन्य धातूमय हुए।।
वे सिद्धगण तुम भक्त जन को, सर्ववांछित फल भरें।
परिपूर्ण धृति सुख शांति देकर, मुक्ति पद में भी धरें।।२।।
जो स्वयं पंचाचार को नित, आचरण में ला रहे।
बहु शिष्यजन को भी उन्हीं में, नित्यमेव लगा रहे।।
देवेन्द्र पूजित पदकमल वे, सूरि पाठक साधुगण।
तुम भाक्तिकों को नित्य देवें, सौख्य औ आरोग्यफल।।३।।
भवनपती व्यंतरपती, ज्योतिष्कपति कल्पाधिपति।
श्री ह्री प्रमुख सब देवियाँ, औ अन्य भी जो सुरपती।।
वे सर्व श्री जिन भक्त के सब, विघ्न को घातें सदा।
जिससे सतत वे भक्तगण, जिनधर्म परकाशें मुदा।।४।।

जब तक जगत में रवि शशी, गंगा नदी सागर रहें।
कुलगिरि सुमेरू जिन जिनालय, सिद्ध परमात्मा रहें।।
तब तक सभी तुम भक्तगण, निज पुत्र पौत्रादिक सहित।
सुख का करो अनुभव मुदित सब, ऋद्धि वृद्धि समृद्धि युत।।५।।

इत्याशीर्वादः

इन आशीर्वादों को पढ़कर पूजा करने वाले यजमान और उसकी पत्नी के वस्त्रों पर भगवान् के चरणों में चढ़ाये गये फूलों का क्षेपण करें।

उसके बाद 'ॐ समाहूता' इत्यादि विसर्जन मंत्र बोलकर यंत्र के ऊपर पुष्पांजलि चढ़ाके देवों का विसर्जन करें पुनः 'चौबीस तीर्थंकर' आदि श्लोक बनाकर चौबीस तीर्थंकर और अर्हंत पाठ पदों का ध्यान करें।

''ॐ समाहूता देवाः सर्वे स्वस्थानं गच्छत गच्छत।''

इस मंत्र से विसर्जन करते हुए यंत्र पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

गीता छंद

चौबीस तीर्थंकर तथा, अर्हंत सिद्धाचार्यगण।
पाठक व साधू और सम्यक्, दरश ज्ञान चरित्र मिल।।
ये आठ परमानंदकारी, नित्य ही मंगल करें।
हम भक्तगण के चित्त में, राजें सतत भवमल हरें।।१।।

इति देवताविसर्जन।

अथ शांतिकामना

शंभु छंद

जिन घातिचतुष्टय नष्ट किया, फिर 'केवलज्ञानी' सूर्य हुए।
जिनकी वाणी जगहितकारी, जो सर्व पदारथ देख लिये।।
जो भव्य कमल हेतू रवि हैं, जिनके पद में सब नत होवें।
वे जिनवर तुम उन भक्तों को, नित लक्ष्मी और शांति देवें।।१।।

(इस श्लोक के द्वारा यंत्र के सन्मुख शांतिधारा करते हुए इस प्रकार अर्घ्य आदि चढ़ावें।)

ॐ अर्हद्भ्यो नमः सिद्धेभ्यो नमः सूरिभ्यो नमः पाठकेभ्यो नमः सर्वसाधुभ्यो नमः अतीतानागतवर्तमान त्रिकाल गोचरानंत द्रव्यगुण पर्यायात्मकवस्तु परिच्छेदक सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राद्यनेकगुणगणाधार-पंचपरमेष्ठियो नमः। पुण्याहं २ प्रियंतां२। ऋषभादि वर्धमानपर्यंत तीर्थंकर परमदेवा पुण्याहं २ प्रियंतां २ तत्समय पालिन्यः गोमुखादि यक्षेश्वराः चक्रेश्वरी प्रभृतिचतुर्विंशति यक्ष्यः पुण्याहं २ प्रियंतां २ आदित्य सोममंगलबुधबृहस्पति-शुक्रशनिराहुकेतु प्रभृत्यष्टाशीतिग्रहाः पुण्याहं २ प्रियंतां २। वासुकिशंखपालकर्कोटक पद्म कुलिकानंत तक्षकमहापद्म जय विजय नागयक्ष गंधर्व ब्रह्मराक्षस भूतव्यंतर प्रभृति भूताश्च सर्वेऽप्येते जिनशासन वत्सलाः पुण्याहं २ प्रियंतां २। ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका यष्ट्रयाजक राजमंत्रि पुरोहित सामंतारक्षक प्रभृति समस्त लोक समूहस्य शांतिवृद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याण स्वायुरारोग्यप्रदा भवंतु, सर्वसौख्य प्रदाश्च संतु। देशे राष्ट्रे पुरेषु च सर्वदैव चौरारिमारीति दुर्भिक्षविग्रह विघ्नौघ दुष्टग्रह भूत शाकिनी प्रभृत्यशेषाण्यनिष्टानि प्रलयं प्रयान्तु। राजा विजयी भवतु। प्रजा सौख्यं भजतु। राज प्रभृति समस्त लोकाः सततं जिनधर्मवत्सलाः पूजादानव्रतशील महामहोत्सवप्रभृति उद्यता भवंतु। चिरकालं नंदंतु। यत्र स्थिता भव्य प्राणिनः संसारसागरं लीलया एवं उत्तीर्य अनुपम सिद्धि सौख्यं अनंतकालं अनुभवन्तु।

(यहाँ तक पढ़कर पुष्प अक्षत आदि से मिला हुआ अर्घ्य चारों तरफ चढ़ावें।) इस प्रकार पूजा विधि समाप्त हुई।

संघादिपूजा

शंभु छंद

पूजा में आया चउविधसंघ, उसकी विधिवत् पूजा कीजे।
पिच्छी व कमंडलु शास्त्र तथा, वस्त्रादि यथायोग्य दीजे।।
पूजन कर्ता कारयिता को, धन वस्त्रों से तर्पित कीजे।
सब जन मन को आनन्दित कर, पूजन का उत्तम फल लीजे।।१।।

दोहा

यह विधान जो विधि सहित, करें करावें भव्य।
अनुमति दें भी धन्य वे, गुणनंदी हों सत्य।।२।।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति

दोहा

ऋषिमंडलपूजा रची, श्रीगुणनंदिमुनीन्द्र।
इक सौ तेरासी प्रमित, हैं श्लोक गुणलीन।।३।।

शंभु छंद

निर्मल चरित्र गुणशील पात्र, श्रीमान् ज्ञानभूषण मुनिवर।
उनका मैं मुनि गुणनंदि शिष्य, अर्हत् शासन का भक्त प्रवर।।
निजमन में वीरप्रभू को रख, उनके पद निकट बैठकर ही।
श्री ऋषिमंडल पूजन विधान, गुणनंदि मुनी ने रचना की।।४।।

इति ऋषिमंडल पूजा

भाषाकर्त्री की प्रशस्ति

दोहा

वीर अब्द पच्चीस सौ, षट् है जग में ख्यात।
चैत्र शुक्ल द्वितीया तिथि, मंगलमयी प्रभात।।१।।

श्री गुणनन्दिमुनीन्द्रकृत, संस्कृत महाविधान।
श्री ऋषिमंडल नाम यह, अतिशयसौख्यनिधान।।२।।

ज्ञानमती मैं आर्यिका, उसके ही अनुसार।
भाषामय रचना रची, जिन भक्ती चितधार।।३।।

इस स्तोत्र विधान को, पढ़ो सुनो नित भव्य।
विधिवत् महाविधान कर, फल पावो नित नव्य।।४।।

यावत् जिनशासन विमल, जग में अचल अनूप।
तावत् यह पूजन विधी, करे जगत सुखरूप।।५।।

इति ऋषिमण्डल पूजन विधान।

अथ ऋषिमंडल स्तोत्र (हिन्दी)

शंभु छंद

आदी अक्षर 'अ' अंताक्षर, 'ह' इन दो को ले लेने में।
'आ' से लेकर 'स' पर्यंते, सब अक्षर आ जाते इनमें।।
अग्नी ज्वाला 'र' बीजाक्षर, ऊपर यह बिंदु सहित सुन्दर।
'अर्हं' यह मंत्र बना सुंदर, यह मंत्र मनोमल शोधन कर।।१।।
ॐ अर्हंतों को नमस्कार, ॐ सिद्धों को द्वय नमस्कार।
ॐ सर्वसूरि को नमस्कार, ॐ पाठक गण को नमस्कार।।
ॐ सर्व साधु को नमस्कार, ॐ सम्यग्दृग् को नमस्कार।
ॐ शुद्ध ज्ञान को नमस्कार, ॐ चारित को द्वय नमस्कार।।२।।
इन अरहंतादि आठपद को, निज निज बीजाक्षर युत करके।
अठ स्थान में स्थापित करते, ये लक्ष्मीप्रद हैं सुख करते।।
पहला पद शिर का रक्षक हो, दूजा मस्तक का त्राण करे।
तीजा पद दोनों दृग् रक्षे, चौथा पद नासा त्राण करे।।३।।
पंचम मुख का रक्षाकर हो, छट्ठा पद ग्रीवा को रक्षे।
सप्तम पद नाभी तक रक्षे, अष्टम पद पादों तक रक्षे।।
पहले प्रणवाक्षर ॐ पुनः, 'ह' को रकार औ बिन्दु सहित।
दूजी तीजी पंचम छट्ठी, सप्तम अष्टम दशवीं द्वादश।।४।।
इन मात्रा युत करके पांचों, पद के पहले पहले अक्षर।
फिर सम्यग्दर्शन ज्ञान और, चारित्र विभक्ती युत सुखकर।।
बस ह्रीं नमः हो इसविध से, अतिशायी मंत्र बना सुन्दर।
यह ऋषिमण्डलस्तवनयंत्र का, मूलमंत्र है श्रेयस्कर।।५।।
नव बीजाक्षर युत सिद्धमंत्र, अष्टादश शुद्धाक्षर इसमें।
आराधक को शुभफलदायी, अति भक्ती से जपिये नितमें।।
जम्बूतरुधारी प्रथमद्वीप, यह लवणोदधि से वेष्टित है।
आठों दिश अधिपति अर्हदादि, इन आठ पदों से शोभित है।।६।।

इस जम्बूद्वीप मध्य मेरू, जो लाखों कूटों से शोभे।
ऊपर ऊपर ज्योतिर्वासी, देवों के भ्रमणों से शोभे।।
इस पर स्थापित ह्रीं मंत्र, उस पर अर्हन्त बिम्ब सुन्दर।
उनको ललाट में स्थित कर, में नमूँ नित्य कर्माञ्जन हर।।७।।

अर्हंतदेव ये अक्षय हैं, निर्मल विशाल अज्ञानरहित।
निर्मान शांत इच्छा विरहित, शुभ सार सारतर औ सात्त्विक।।
राजस कर्मारि नाश हेतु, तामस है विरस शुद्ध तैजस।
ज्योत्स्नासम साकार तथापी, निराकार औ सरस विरस।।८।।

पर उत्तम हैं उत्तमतर औ, उत्तमतम सर्वोत्तम इससे।
पर तथा परापर परातीत, पर का परपरापरं कहते।।
तनसहित सकल तनरहित निकल, संतुष्ट पूर्णभृत भ्रांति रहित।
निर्लेप निरंजन निराकांक्ष, संशय विरहित क्षणभंगरहित।।९।।

ब्रह्मा ईश्वर औ बुद्ध शुद्ध, वे महादेव ज्योतीस्वरूप।
सब लोकालोक प्रकाशी हैं, अर्हंत जिनेश्वर चित्स्वरूप।।
जो सांत सरेफ बिन्दुमंडित, चौथे स्वर से युत होता है।
वह 'ह्रीं' बीज ध्यानादि योग्य, अर्हंत नाम का होता है।।१०।।

यह श्वेत वर्ण है श्याम वर्ण है, लाल वर्ण औ नील वर्ण।
औ पीतवर्ण भी है उत्तम, सर्वोत्तम माना महावर्ण।।
इस ह्रीं बीज में स्थित हैं, निज निज वर्णों से युक्त सभी।
वृषभादि जिनेश्वर इस स्तोत्र में, स्थित ध्यानयोग नित भी।।११।।

सित अर्ध चंद्रसम नाद बिन्दु, नीली मस्तक है लाल वर्ण।
सब तरफ हकार स्वर्णसम 'है', ईकार कहा है हरित वर्ण।।
इस तरह 'ह्रीँ' है पंचवर्ण, उन उन वर्णों के तीर्थंकर।
उस उस थल में स्थापित कर, उन सबको नमन करो सुखकर।।१२।।

श्री चंद्रप्रभ औ पुष्पदंत, शशिसदृश नाद में स्थित हैं।
श्री नेमिनाथ औ मुनिसुव्रत, बिंदू के मध्य विराजित हैं।।
श्री पद्मप्रभू औ वासुपूज्य, मस्तक के मध्य अधिष्ठित हैं।
श्री जिनसुपार्श्व औ पार्श्वनाथ, ईकार वर्ण के आश्रित हैं।।१३।।

सोलह तीर्थंकर शेष सभी, ह औ रकार में राजित हैं।
मायाबीजाक्षर ह्रीं मध्य, चौबीसों जिनवर आश्रित हैं।।
ये रागद्वेष औ मोह रहित, सब पाप रहित चौबिस जिनवर।
सम्पूर्ण लोक में भव्यों के, हेतू होवें वे नित सुखकर।।१४।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सर्पों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, नागिनी से मुझे न हो बाधा।।१५।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, गोहों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, बिच्छू से हो न मुझे बाधा।।१६।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, काकिनी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, डाकिनी से हो न मुझे बाधा।।१७।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, साकिनी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, राकिनी से हो न मुझे बाधा।।१८।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, लाकिनी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, शाकिनी से हो न मुझे बाधा।।१९।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, हाकिनी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, भैरव से मुझे न हो बाधा।।२०।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, राक्षस से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, व्यंतर से मुझे न हो बाधा।।२१।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, भेकस से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, लीनस से मुझे न हो बाधा।।२२।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, ग्रहों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, चोरों से मुझे न हो बाधा।।२३।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, अग्नी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सींगवालों से नहिं हो बाधा।।२४।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, दाढ़वालों से नहिं हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, रेलप[१] से मुझे न हो बाधा।।२५।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, पक्षी से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, दैत्यों से मुझे न हो बाधा।।२६।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, जृंभक[२] से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, मेघों से मुझे न हो बाधा।।२७।।

१. सरकने वाले जीव। २. जृंभक देव

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सिंहों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सूकर से मुझे न हो बाधा।।२८।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, चीतों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, हाथी से मुझे न हो बाधा।।२९।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, राजा से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, शत्रू से मुझे न हो बाधा।।३०।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, ग्रामिण से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, दुर्जन से मुझे न हो बाधा।।३१।।

देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, रोगों से मुझे न हो बाधा।।
देवाधिदेव का जो समूह, उनके तन की सुन्दर आभा।
उससे सर्वांग ढका मेरा, सब जन से मुझे न हो बाधा।।३२।।

श्री गौतम गुरु की जो मुद्रा, उससे जग में श्रुत ज्ञान लाभ।
उनसे भी अधिक ज्योतिधारी, अर्हंत सर्व निधि ईश ख्यात।।
पातालवासि भावन व्यंतर, भूपीठवासि ज्योतिष सुरगण।
ये देव करें रक्षा मेरी, दिव के भी कल्पवासि सुरगण।।३३।।

जो अवधिज्ञान ऋद्धीयुत मुनि, जो परमावधि ऋद्धीयुत हैं।
वे मेरी रक्षा करें सर्वतरफी वे सभी दिव्य मुनि हैं।।
भावन व्यन्तर ज्योतिषी कल्पवासी हैं देव चारविध के।
उनको नितप्रति प्रणमन होवे, वे मेरी रक्षा सदा करें।।३४।।

देशावधि और श्रुतावधि ज्ञान के धारी मुनियों को वन्दन।
परमावधि सर्वावधि मुनियों के चरणों में शत बार नमन।।
जो बुद्धि ऋद्धि सर्वौषधि और अनन्तबलादिक ऋद्धी हैं।
तप ऋद्धि और रस ऋद्धि विक्रिया तप अक्षीण समन्वित हैं।।३५।।

देवेन्द्रवंद्य भवपार हुए सम्यक्त्ववृद्धि करने वाले।
चारित्र युक्त मंगलकारी मुक्तीपद को वरने वाले।।
भव्यों के अधिपति वे यतिवर हम सबका मंगल करें सदा।
त्रिकरण शुद्धी से नमूँ उन्हें वे सभी अमंगल हरें सदा।।३६।।

तप की शक्ती से ही मुनियों को सभी ऋद्धियाँ मिलती हैं।
उनके वन्दन से भव्यों में सम्यक्त्व की कलिका खिलती है।।
ॐ श्री ह्री धृति लक्ष्मी गौरी, चंडी सरस्वती जया अम्बा।
विजया क्लिन्ना अजिता नित्या, औ मदद्रवा औ कामांगा।।३७।।

कामवाणा देवी सानंदा, सुरि नंदमालिनी औ माया।
मायाविनि रौद्री कलादेवि, कालीदेवी औ कलिप्रिया।।
जिनशासन रक्षाकर्त्री ये सब, महादेवियाँ हैं जग में।
ये मुझको कांती लक्ष्मी धृति, मति देवें क्षेम करें जग में।।३८।।

दुर्जन बेताल पिशाच भूत, औ क्रूर दैत्य गण हैं जितने।
देवाधिदेव के प्रभाव से, वे सब उपशांत रहें जग में।।
श्री ऋषिमंडल स्तोत्र दिव्य, यह गोप्य तथा अतिदुर्लभ है।
जगरक्षाकृत निर्दोष तीर्थकृत, वीरप्रभू से भाषित है।।३९।।

रण नृपदरबार अग्नि जल गज, औ दुर्ग सिंह के संकट में।
शमशान विपिन में मंत्र जाप्य, मनुजों का त्राण करे सच में।।
जो राज्यभ्रष्ट निज राज्य लहें, पदभ्रष्ट मनुज निज पद पाते।
इसमें संदेह नहीं लक्ष्मी से, च्युत निजलक्ष्मी भी पाते।।४०।।

भार्या अर्थी भार्या लभते, सुत अर्थी सुत को पा जाते।
स्तोत्र स्मरण मात्र से ही, धन अर्थी धन भी पा जाते।।
कांचन रूपा अथवा कांसे पर, लिखकर जो पूजे इसको।
उसके घर शाश्वत अष्टमहा-सिद्धी रहती है यह समझो।।४१।।

यह मंत्र भूर्जपत्रे पर लिख, मस्तक ग्रीवा या बाहू में।
जो धारें दिव्य यंत्र उसके, सब भय विनाश होते क्षण में।।
वह भूत प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य, औ पिशाच गण के कष्टों से।
छुट जाता नहिं संशय इसमें, कफ वात पित्त के रोगों से।।४२।।

जो अधो मध्य औ ऊर्ध्वलोक में, जिनप्रतिमाएँ शाश्वत हैं।
उनके दर्शन स्तुति वंदन से, जो फल वह स्तुति पठन का है।।
यह महास्तोत्र अति गोपनीय, जिस किसको नहिं देने का है।
मिथ्यादृष्टी को देने से, शिशुघात पाप पद पद पर है।।४३।।

आचाम्ल आदि तप कर चौबिस, जिनवर की पूजाविधि करके।
जप आठ हजार करे विधिवत्, सब कार्य सिद्ध होते उसके।।
जो प्रतिदिन प्रातः इसी मंत्र की, इक सौ अठ जप करते हैं।
उनके शरीर में व्याधि न हो, सुख संपत्ती वो लभते हैं।।४४।।

जो आठ मास तक नित प्रातः, इस महास्तोत्र को पढ़ते हैं।
वे निज में तेजपुंज अर्हन्त, बिम्ब का दर्शन करते हैं।।
अर्हन्तबिंब दर्शन होने पर, निश्चित ही सप्तम भव में।
वे मुक्तीपद पा लेते हैं, परमानन्द संपति युत सच में।।४५।।

—दोहा—

श्री गुणनन्दि मुनीन्द्र कृत, ऋषिमण्डल स्तोत्र।
''ज्ञानमती'' मैं आर्यिका, किया पद्य स्तोत्र।।४६।।

स्तोत्र महास्तोत्र यह, सब स्तुति में सर्वोच्च।
स्मरण पठन औ जाप से, जन हों अघ से मुक्त।।४७।।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री–आर्यिका चन्दनामती

—स्थापना—

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं . . . .

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

—अष्टक—

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

—शेरछंद—

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा . . .।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् . . .।।

जयमाला

—दोहा—

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन —नागिन-मेरा मन डोले . . .।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

—दोहा—

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शंभुछंद—

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

आरती चौबीस भगवान की

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

मैं तो आरती उतारूँ रे, चौबीसों जिनवर की।
जय जय चौबीसों जिनवर, जय जय जय।।

पहली आरती करूँ कैलाश, गिरिवर अनुपम की। गिरिवर अनुपम की।
मुक्ति पाये जहाँ वृषभेश, नाभि के नन्दन की। नाभि के नन्दन की।
तीर्थ करतार कहे, युग के आधार रहे, महिमा है अपरम्पार,
हो हो जिनकी महिमा है अपरम्पार। मैं तो.....

दूजी आरती करूं सिद्ध क्षेत्र चम्पा पुरिवर की। चम्पा पुरिवर की।
वासुपूज्य जिनेश्वर ध्याय, वसुपूज्य नन्दन की। वसुपूज्य नन्दन की।
भक्ति करो झूम झूम, नृत्यकरो घूम घूम, जीवन सुधारो रे।
हो प्यारा प्यारा जीवन सुधारो रे। मैं तो.....

तीजी आरती महागिरिराज, गिरनार पर्वत की। गिरनार पर्वत की।
राजुल त्याग चले नेमिनाथ, सिद्धि को वरने को। सिद्धि को वरने को।
दीक्षा ले साधु बने, मुक्ति के कांत बने, सिद्ध लोक विराजे जा,
हो हो सिद्धलोक विराजे जा। मैं तो.....

चौथी आरती करूँ निर्वाण, पावापुरिवर की। पावापुरिवर की।
त्रिशलानन्दन हैं वीर महावीर, मुक्ति के स्थल की। मुक्ति के स्थल की।
कुण्डलपुर जन्म हुआ, कण कण पवित्र हुआ, सिद्धार्थ के दरबार,
हो हो राजा सिद्धार्थ के दरबार। मैं तो.....

पंचम आरती करूँ उस तीर्थ, अद्भुत अनुपम की। अद्भुत अनुपम की।
सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र, बीस जिनेश्वर की। बीस जिनेश्वर की।
'चन्दना' गुणगान करे, मन में यह आश धरे, भक्ति करूँ दिन रात,
हो हो प्रभु भक्ति करूँ दिन रात। मैं तो.....

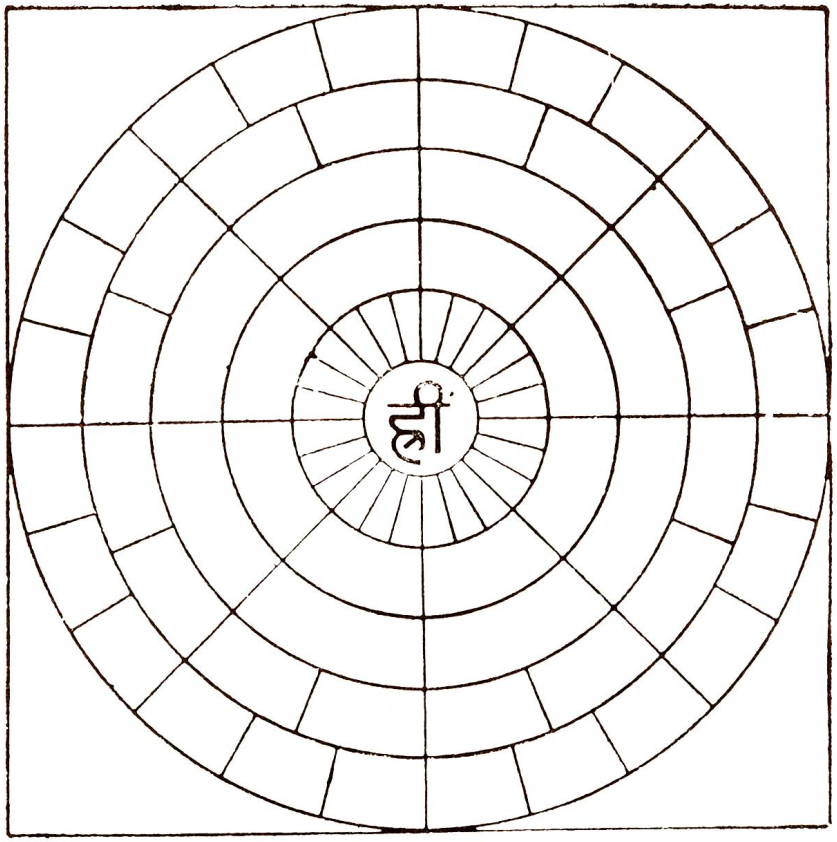

ऋषिमण्डल विधान का नक्शा

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

आ जा रि चांदनी, हमारो पूनो चांद लेके आ जा-2।
हम सब आश लगाए-आ जा, तेरे दर्शन पाएं-आ जा।।
जीवन सफल बनाएं-आ जा।
आ जा.....।।टेक.।।

धरती पर इक चांद जो आया, नभ का चांद स्वयं शरमाया।
ज्ञानमती बन ज्ञान लुटाया, जग को जीवन सार बताया।।
आ जा रि चांदनी.....।।1।।

अवध की धरती मांग रही थी, अपने चांद को चाह रही थी।
पाकर मानो सब कुछ पाया, ज्ञानमती माता की छाया।।
आ जा रि चांदनी.....।।2।।

तुम सी अद्भुत कन्या पाकर, धन्य टिकैतनगर रत्नाकर।
ऐसे तुमने किये हैं काम, हुआ ग्राम का जग में नाम।।
आ जा रि चांदनी.....।।3।।

तुमने कई इतिहास रचे हैं, तेरे गुणों के बाग सजे हैं।
ग्रंथों का भण्डार भरा, तुझमें श्रुत का सार भरा।।
आ जा रि चांदनी.....।।4।।

श्वेत वसन में तेरी सूरत, लगती जिनवाणी सम मूरत।।
सबको दें ऐसा वरदान, लहे ''चन्दना'' तुम सम ज्ञान।
आ जा रि चांदनी.....।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज-जिस गली में.....

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।
पड़ गई दृष्टि जिस तीर्थ पर मात की,
कोटि दृष्टी में वे छा गए देश की।।टेक.।।
मुक्तिपथ पर चली जब वो कच्ची कली,
फूल बन बालसतियों की बगिया खिली।
फूल बन.....
क्वांरी कन्याओं के खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।1।।
लेखनी ने लिखे सैकड़ों ग्रंथ जब,
अन्य माताओं ने भी लिखे ग्रंथ तब।।
अन्य माताओं.....
ज्ञानज्योति के अब खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।2।।
तीर्थ उद्धार की प्रेरिका बन गईं,
मंत्र 'अर्हम्' की ये देशना बन गईं।
मंत्र अर्हम्.....
दे गईं नव कृती रास्ते रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।3।।
पार्श्वप्रभु के महोत्सव की दी प्रेरणा,
जन्मभूमि बनारस में उत्सव मना।।
जन्मभूमि.....
ऐसे उत्सव चलें सब शहर ग्राम में, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।4।।
''चन्दनामति'' ये चैतन्य तीरथ बनीं,
जैन संस्कृति की सचमुच ये कीरत बनीं।
जैन.....
भक्त इनके सदा भक्ति में नाचते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।5।।